steps have to be taken. That is what I want to bring to the notice of the Government, through you. Thank you.

SHRI A. VIJAYA RAGHAVAN (Kerala): Sir, I am wholeheartedly supporting the views expressed by my colleague, Mr. Chitharanjan, in this august House. Yesterday, hundreds of handloom weavers came from Kerala to demonstrate in Delhi. They are all from the most backward sections of the society and most of them were women. Sir, never in their life they have had a good meal They came all the way to Delhi to lodge their protest. Normally, we, Keratites, are in the forefront of such protests. To my surprise, I saw yesterday that there were handloom weavers farmers from Andhra Pradesh also. We met all of them on the streets of Delhi So, it shows the seriousness of the situation. Something adverse happened in this area. You see, what was the situation 4-5 years back? Starvation deaths were reported from different parts of the country, especially from Andhra Pradesh. Now, because of these recommendations, they are going to lose whatever little benefits they have been getting from the Government. The situation is very bad. Because of this new trend, new fashion, one of the oldest traditional industry of this country is facing a serious threat. The younger generation is normally not using handloom cloth. Even the people, in States like Kerala, who had been using *dhotis,* are now turning to pants. The demand for handloom cloth in the market is very less. So, assistance from the Government is very much needed. The Government should protect them by extending rebates and other assistance, which they had been receiving earlier. Because of these new recommendations, the life of these weavers is going to be more and more miserable. There would be starvation deaths in villages. So, in order to avoid such a situation, the Government should not accept these recommendations, and maximum assistance should be given to the handloom weaving community of the country.

Need to take Initiative by Government in the interest of the Handloom Sector

श्री रूमन्दला रामचन्द्रैया (आन्ध्र प्रदेश) : सभापति जी, हैंडलूम वीवर्स के बारे में जितना भी कहो, कम है । हम लोग हैंडलूम वीवर्स के बारे में भाषण देते हैं कि किसान के बाद वीवर है लेकिन जब बजट में प्रावधान किया जाता है तो हैंडलूम वीवर्स को बहुत कम नज़र से देखा जाता है । उसके लिए इससे पहले कई स्कीम्स थीं लेकिन आज एक कमेटी की

रिकमंडेशंस में हैंडलूम वीवर्स को बहुत ही घाटा पहुंचाने की रिकमंडेशंस की गई है । टेक्सटाइल में पावरलूम है, मिल-मेड है, हैंडलूम है । हैंडलूम में आन्ध्र प्रदेश मे सहकारी संघ के माध्यम से करीब 800 सोसायटीज़ हैं कॉटन की और करीब 600 सोसायटीज़ सिल्क की हैं । इसके साथ-साथ आज यू0 पी0, बिहार, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, हर जगह हैंडलूम वीवर्स को कपड़ा तैयार करके उसकी मार्केटिंक की व्यवस्था करने में बहुत सी कठिनाइयों को समाना करना पड़ रहा है । उसके साथ-साथ जो सत्यम कमेटी की रिकमंडेशंस हैं, इससे पहले सरकार ने जो सुविधाएं हैंडलूम वीवर्स के लिए दी थीं, कमेटी ने उन सुविधाओं को न देने के लिए कहा है । यह कहां का न्याय है ? किसी भी कमेटी को किसी भी व्यवस्था को न देने के लिए कहा है । यह कहां का न्याय है ? किसी भी कमेटी को किसी भी व्यवस्था को सुधारने के लिए, उसके लिए लाभदायक व्यवस्था करनी चाहिए लेकिन इस कमेटी ने ऐसा कुछ नहीं किया हैं । हैंडलूम वालों को इससे पहले जो रिज़र्वेशन ऐक्ट के तहत 11 प्रकार के वस्त्र तैयार करने की सुविधा थी, उसे कमेटी ने समाप्त करने की सिफारिश की है और हैंडलूम द्वारा तैयार होनेवाले वस्त्र को भी रोकने के लिए कहा है और यार्न देने के लिए भी मना किया है ।

महोदय, आज लाखों लोग बेरोजगार होते जा रहे हैं । अगर गांवों में कोई भी रोजगार मिलना है तो हैंडलूम व्यवस्था रखनी बहुत आवश्यक है । महोदय, 4 दिल पहले हजारों लोग आंध्र प्रदेश से दिल्ली आए हैं और प्रधानमंत्री जी से मिले हैं और टेक्सटाइल मिनिस्टर से भी मिले हैं । उनसे जो आश्वासन उन्हें मिलना चाहिए, वह नहीं मिला है । मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे जो भी नियम बनाएं, हैंडलूम वीवर्स को ध्यान में रखते हुए बनाएं ताकि उनको चाहता हूं कि वे जो भी नियम बनाएं, किया गया कपड़ा बाजार में बिके और उनको यार्न वगैरह उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त सुविधाएं दी जाएं ।

महोदय, जब पावरलूम, हैंडलूम और मिल-मेड कपड़े को देखा गया तो पता चला कि पावरलूम से कम दाम में कपड़ा तैयार हो जाता है और मार्केट में ज्यादा बिकता है लेकिन हैंडलूम का कपड़ा मनुष्य की मेहनत से तैयार होकर अच्छा रहता है लेकिन थोड़ा दाम ज्यादा होने से कम बिकता है । उसके लिए एम0 डी0 ए0 मार्केटिंग फैसिलिटी भारत सरकार ने दी थी 10-15-20 परसेंट लेकिन इस कमेटी ने इसको भी समाप्त करने की सिफारिश की है । इस कमेटी ने जो रिकमंडेशंस की हैं, वे पावरलूम और मिल वालों को लाभ पहुंचाने के लिए की हैं लेकिन हैंडलूम वालों को लाभ पहुंचाने की एक भी रिकमंडेशन इस कमेटी ने नहीं की है । आपके माध्यम से मैं भारत सरकार से यह अनुरोध करता हूं कि वह जो कुछ भी काम करने का प्लान करें, न्यू-टेक्सटाइल्स पॉलिसी बनाएं तो हैण्डलूम वीवर्स को ध्यान में रखकर

बनाए ताकि उनको अच्छा काम मिले,उनकों कपड़ों की मार्केटिंग फेसिलिटी रहे और उनको कुछ ऐसी सुविधाएं दें ताकि उससे उनका जीवन चल सके। आज उनका जीवन चलाने में भी बहुत मुश्किल है। यह सारे भारत की समस्या है। आज एक राज्य में आन्ध्र प्रदेश या कर्नाटक या तमिलनाडु का नहीं, बुनकर लोग हर राज्य में हैं, हर मंडल में हैं, हर कंस्टीट्यूंसीमें हैं, हर जगह हैं। कहीं 10 हैं, कहीं लाख हैं, कहीं हजार हैं तथा कहीं करोड़ हैं। आज भारत में दस करोड़ बुनकर लोग हैं। आन्ध्र प्रदेश में 60 लाख बुनकर लोग इस वृद्धि के माध्यम से अपना जीवन गुजारते हैं। इसमें वूल है, सिल्क है, कॉटन है, टसर है। तरह-तरह का कपड़ा उत्पादन वह करते हैं। तो आपसे यह निवेदन है, सरकार से ज्यादा फायदा कराने के लिए इन गरीबों का न मुंह है, न कुछ है, मेहनत करते हैं, खामोश रहते हैं। कृपया सदन के हर राजनीतिक पार्टी से, हर सदस्य से मेरी यह प्रार्थना है, मेरा यह निवेदन है कि बुनकरों को बचाओं। धन्यवाद।

Recent statement mady by the Shahi Imam of Jama Masjid at Ramlila grounds, Delhi

श्री एस0 एस0 अहलुवालिया (बिहार) : सभापति महोदय, आपने बोलने का मौका दिया इसके लिए धन्यवाद। मैं एक अहम मुद्दा आपके सामने उठाना चाहता हूं। 21 अप्रैल को दिल्ली के जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी ने रामलीला मैदान में एक मीटिंग बुलाई जिसका नाम दिया था मजहब बचाओं रैली। वहां उन्होंने भाषण के क्रम में जो कुछ कहा, मेरे मन में, छात्र जीवन से कोई भी किसी धर्म का मुखिया हो, अगुवा हो, नेता हो उसके प्रति मैं श्रद्धा रखता हूं, एक इज्जत रखता हूं। पर उनका भाषण सुनकर दुख हुआ और उनके शब्द जो थे वह दुर्भाग्यपूर्ण थे और विकृत वक्तव्य के रूप में उसकी व्याख्या दी जा सकती है। इस वक्तवरू की, इस भाषण की जितनी भर्त्सना की जाए मैं समझता हूं वह कम होगी। उनके इस भाषण ने पूरे भारत के समाज के हर एक भारतवासी के दिल में अपार पीड़ा पहुंचाई है। महोद, मैं एक राष्ट्रवादी सिख हूं, अल्पसंख्यक समुदाय से आता हूं। महोदय, मैं पूरी शिद्दत से महसूत करता हूं कि सैय्यद बुखारी के इन वक्तव्यों में राष्ट्रद्रोह की बदबू आती है। महोदय, अफसोस की बात है वहां पर बहुत सारे दलों के नेता तो नहीं, पर मुस्लिम लीग के नेता उपस्थित थे और उनकी हाजरी में उन्होंने कहा, जिसे मैं कोट करता हूं जो अखबारी में छपा है: "मैं भारतवर्ष में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई0 एस0 आई0 का सबसे बड़ा एजेंट हूं। अगर सरकार में इतनी ताकत है तो मुझे गिरफ्तार करके देखले, इसके साथ-साथ इसका अंजाम भी देखले।"